अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2017) | दिनांक 20.12.2017

पांचवा वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

संजया – 25

प्र.1 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) सूक्ष्म संपराय चारित्र – काल द्वार।

(ख) परिहार विशुद्धि चारित्र – सन्निकर्ष द्वार।

(ग) छेदोपस्थापनीय चारित्र – अंतर द्वार।

(घ) सामायिक चारित्र – आकर्ष द्वार।

(ङ) सूक्ष्म संपराय चारित्र – प्रवज्या द्वार।

(च) यथाख्यात चारित्र – परिणाम द्वार।

(छ) परिहार विशुद्धि चारित्र – स्थिति द्वार।

प्र.2 किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिये – 5

(क) यथाख्यात चारित्र उत्कृष्ट पांच बार किस अपेक्षा से प्राप्त होता है?

(ख) आकर्ष किसे कहते हैं?

(ग) कम से कम कितनी अवस्था वाला साधु परिहार विशुद्धि चारित्र ग्रहण कर सकता है?

(घ) सूक्ष्म संपराय का उपसंपद्हान द्वार लिखें।

(ड.) परिहार विशुद्धि का जघन्य अंतर काल किस अपेक्षा से है?

(च) सूक्ष्म संपराय चारित्र का कर्म बंध 6 कर्मों का किस अपेक्षा से कहा गया है?

प्र.3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 10

(क) किस चारित्र वाले कल्पातीत होते हैं? तथा वे किन–किन गुणस्थानों से होते हैं? उन्हें स्थितकल्पी व अस्थितकल्पी क्यों कहा जाता है?

(ख) संयम–स्थान किसे कहते हैं? संयम के असंख्य स्थान क्यों व कैसे हैं?

(ग) यदि पांच व छः कर्मों की उदीरणा हो तो किन–किन कर्मों की उदीरणा होती है, तथा किस गुणस्थानों में किस समय होती है?

(घ) यथाख्यात चारित्र वाला यथाख्यात छोड़कर कितने व किन–किन स्थानों में किस अपेक्षा से जा सकता है?

(ङ) छेदोपस्थापनीय चारित्र का अंतर द्वार में 18 करोड़ा करोड़ सागर से कुछ कम का तात्पर्य क्या है? विस्तार से लिखें।

(च) सूक्ष्म संपराय चारित्र के अंतर द्वार में अनेक जीवों की अपेक्षा जघन्य 1 समय व उत्कृष्ट 6 मास किस अपेक्षा से है? विस्तार से लिखें।

नियंठा – 25

प्र.4 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें – 5

(क) बकुश के परिणाम वर्धमान, हीयमान व अवस्थित किस अपेक्षा से है?

(ख) प्रतिसेवना की जघन्य स्थिति कितनी व किस अपेक्षा से है?

(ग) पुलाक की स्थिति एक जीव की अपेक्षा से अंतर्मुहूर्त्त क्यों कही गई है?

(घ) प्रच्छन्न व प्रकट रूप से दोष लगाना किस निर्ग्रंथ का कौन सा प्रकार है?

(ड) निर्ग्रंथ व स्नातक में किस गुणस्थान में कौन से परिणाम क्यों पाये जाते हैं?

(च) समस्त साधुओं में निर्ग्रंथ तथा बकुश की संख्या कितनी मिलती है?

(छ) छहों निर्ग्रंथ में कौन–कौन से निर्ग्रंथ सदाकाल रहेंगें।

प्र.5 कोई दस द्वार लिखें – 20

(क) कषाय कुशील – काल द्वार (ख) प्रतिसेवना – सन्निकर्ष द्वार
(ग) पुलाक – गति–पदवी स्थिति (घ) बकुश – परिणाम–स्थिति
(ङ) कषाय कुशील – कर्म बंध व कर्म उदीरणा (च) बकुश – उपसंपदहान
(छ) निर्ग्रंथ – अंतर द्वार (ज) प्रतिसेवना – आकर्ष
(झ) स्नातक – स्थिति द्वार (एक जीव व अनेक जीव की अपेक्षा)
(ञ) निर्ग्रंथ – प्रवज्या द्वार (ट) निर्ग्रंथ – क्षेत्र द्वार
(ठ) कषाय कुशील – ज्ञान व अध्ययन।

गीतिका – नियंठा दिग्दर्शन – 10

प्र.6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त लिखें – 2

(क) भगवान ने ज्ञातासूत्र में किसे मिथ्यात्वी बताया है?
(ख) छठे गुणस्थान में भगवान ने कितने योग बताए हैं तथा वहां पर दोष की स्थापना क्यों नहीं होती है?
(ग) छठा गुणस्थान किन–किन कारणों से छूटता है?

प्र.7 कोई दो पद्य को अर्थ सहित पूरा करें – 8

(क) ''मासी चौमासी.....आलोय''। (ख) ''सम्यक्त्व थिर.....सोय''।
(ग) ''बनखंड बावड़ी.....सुध होय''। (घ) ''अथणा टालोकर.....अवलोय''।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 40

प्र.8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें –

(क) पच्चीस बोल – आश्रव 'अथवा' संवर के अंतिम आठ भेद लिखें। 2
(ख) चतुर्भंगी – पंन्द्रहवां बोल 'अथवा' उन्नीसवां बोल लिखें। 3
(ग) पच्चीस बोल की चर्चा – बीसवां बोल 'अथवा' सोलह से इक्कीस दण्डक। 3
(घ) तत्त्वचर्चा – छह द्रव्यों पर छह में नौ की चर्चा 'अथवा' नौ तत्त्व पर आज्ञा अनाज्ञा। 3
(ङ) कर्म प्रकृति – वेदनीय कर्म की स्थिति व अबाधाकाल 'अथवा' दर्शन मोह की प्रकृतियों की कार्य व स्थिति। 4
(च) जैन तत्त्व प्रवेश – दृष्टांत द्वार में से 'आश्रव' 'अथवा' सामान्य गुण के भेद व्याख्या सहित लिखें। 4
(छ) प्रतिक्रमण – आलोचना सूत्र 'अथवा' अभ्युत्थान सूत्र लिखें। 3
(ज) जैन तत्त्व प्रवेश – पुण्य–पाप द्वार 'अथवा' नय की परिभाषा लिखते हुए प्रमाण द्वार को अंत तक लिखें। 4
(झ) इक्कीस द्वार – अनाहारक 'अथवा' चक्षुदर्शनी का बोल पूरा लिखें। 4
(ञ) बावन बोल – संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा? 'अथवा' उदय के तैंतीस बोल किस–किस कर्म के उदय से? 4
(ट) लघुदण्डक –दर्शन द्वार 'अथवा' चन्द्रमा, सूर्य व ग्रह देवों की स्थिति लिखें। 3
(ठ) पाँच ज्ञान – मनःपर्यव ज्ञान का विषय क्षेत्रतः 'अथवा' प्रतिबोधक दृष्टांत लिखें। 3